INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रभावकारिता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन

(A study of emotional intelligence and self-efficacy of students studying in higher secondary schools in relation to their academic achievement)

प्रीति तिवारी,[1] देश दीपक,[2] डॉ. रश्मि गोरे[3]

[1] *एम. एड. विद्यार्थी, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)*

[2] *आईसीएसएसआर शोध अध्येता, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)*

E-mail: ddesh619@gmail.com

[3] *सह–आचार्या एवं विभागाध्यक्षा, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)*

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/08.2025-74437716/IRJHIS2508020

सारांश :

शिक्षा मानव जीवन के बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक और संवेगात्मक विकास का मूल आधार है। यह केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया न होकर व्यक्ति को आत्मनिर्भर, सक्षम और जिम्मेदार नागरिक बनाती है। जीवनपर्यंत चलने वाली इस प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय और समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संवेगात्मक विकास, जैसे प्रेम, भय, क्रोध, हर्ष आदि, व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण और सीखने की क्षमता पर सीधा प्रभाव डालते हैं। सकारात्मक भावनाएं सीखने को प्रोत्साहित करती हैं, जबकि नकारात्मक भावनाएं बाधा उत्पन्न करती हैं। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य तभी पूर्ण होता है जब इसमें भावनात्मक संतुलन और सामाजिक संवेदनशीलता को भी सम्मिलित किया जाए। इस शोध अध्ययन के उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना एवं आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि द्वारा कानपुर नगर के 200 उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों का सरल यादृच्छिक चयन किया गया। संवेगात्मक बुद्धि, आत्म–प्रभावकारिता और शैक्षिक उपलब्धि को मानकीकृत मापनी उपकरण व कक्षा 10 के अंकों से मापा गया। आँकड़ों का विश्लेषण कार्ल पियर्सन सहसंबंध विधि से किया गया। परिणाम के रूप में पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध एवंआत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

मुख्य शब्द *: उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, संवेगात्मक बुद्धि, आत्म–प्रभावकारिता, शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यार्थी*

प्रस्तावना :

शिक्षा मानव जीवन के विकास का मूल आधार है। यह केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र उत्थान का प्रमुख साधन है। शिक्षा मनुष्य को अतीत से जोड़ती है, वर्तमान में सार्थक जीवन जीने की क्षमता प्रदान करती है तथा भविष्य का निर्माण करने में सहायक होती है। मनुष्य, एक

सामाजिक प्राणी होने के नाते, समाज के निर्माण, संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा उसे वह शक्ति और दृष्टि प्रदान करती है जिसके माध्यम से वह अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ–साथ सामूहिक कल्याण में भी योगदान देता है।जन्म के समय मनुष्य निर्बल और पराश्रित होता है, किंतु शिक्षा के माध्यम से वह आत्मनिर्भर, सक्षम और सामाजिक रूप से उपयोगी सदस्य बनता है। जनतांत्रिक युग में शिक्षा केवल व्यक्तिगत प्रगति का साधन नहीं है, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय उन्नति का भी मूल आधार है। प्राचीन काल से ही शिक्षा की उपादेयता, आवश्यकता एवं महत्ता स्वीकार की जाती रही है। साधारण जनता से लेकर दार्शनिकों और राजपुरुषों तक, सभी ने इसे जीवन का अभिन्न अंग माना।

शिक्षा व्यक्ति की जन्मजात प्रवृत्तियों एवं शक्तियों का विकास करती है, उसके ज्ञान, कला–कौशल और व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाती है, तथा उसे सभ्य, सुसंस्कृत और योग्य नागरिक के रूप में ढालती है। यह प्रक्रिया बालक के जन्म से ही प्रारंभ हो जाती है, जब माता–पिता एवं परिवार के सदस्य उसे बोलना, सुनना और सामाजिक व्यवहार सिखाने लगते हैं। जैसे–जैसे बालक बड़ा होता है, विद्यालय और समुदाय के माध्यम से उसकी शिक्षा सुनियोजित और औपचारिक रूप धारण कर लेती है। शिक्षा का यह सिलसिला जीवनपर्यंत चलता रहता है, यही कारण है कि शिक्षा को आजीवन चलने वाली प्रक्रिया कहा गया है।व्यक्ति अपने जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक जो कुछ सीखता और अनुभव करता है, वह सब शिक्षा के व्यापक अर्थ के अंतर्गत आता है। इस निरंतर सीखने की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप व्यक्ति सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण में सामंजस्य स्थापित करना सीखता है। भारतीय समाज में शिक्षा का मुख्य कार्य व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति करना, उसकी दक्षताओं को विकसित करना तथा उसे बदलते सामाजिक परिदृश्य के अनुरूप ढालना है। शिक्षा के बिना मानव जीवन भारस्वरूप हो जाता है, जबकि शिक्षा उसे समस्याओं का समाधान खोजने, कठिनाइयों का सामना करने और जीवन को सुसंस्कृत बनाने की क्षमता प्रदान करती है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, ''मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।'' इस दृष्टिकोण से शिक्षा व्यक्ति में निहित संभावनाओं को पहचानकर उन्हें विकसित करने का साधन है। इसमें केवल बौद्धिक विकास ही नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक परिपक्वता का भी विशेष महत्व है।

शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों ने इस तथ्य पर बल दिया है कि संवेगात्मक विकास, बौद्धिक विकास जितना ही आवश्यक है। जब बालक जन्म लेता है, तो सबसे पहले वह अपनी मां और परिवार के अन्य सदस्यों के संपर्क में आता है। इसके बाद पड़ोस और मित्रों के माध्यम से उसका सामाजिक और संवेगात्मक विकास प्रारंभ होता है। प्रत्येक व्यक्ति में प्रेम, भय, क्रोध, हर्ष, वासना आदि भाव जन्मजात रूप से विद्यमान रहते हैं। ये भाव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में प्रकट होते हैं, जैसे कृ सुखद अनुभूति पर हर्षित होना, भयानक वस्तु देखकर भयभीत होना या इच्छा के विरुद्ध कार्य होने पर क्रोधित होना।बाल्यावस्था को संवेगात्मक विकास की विशिष्ट अवस्था माना जाता है, क्योंकि इस काल में प्राप्त अनुभव व्यक्ति के भावनात्मक जीवन की नींव रखते हैं। शैशवावस्था में संवेगों का विकास धीमी गति से होता है, जबकि किशोरावस्था में यह तीव्र और जटिल रूप ले लेता है। किशोरावस्था बालक के जीवन की सबसे चुनौतीपूर्ण अवस्था है, जिसमें भावनाएं अक्सर तीव्रता और विचित्रता से प्रकट होती हैं।मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से संकेत मिलता है कि संवेगात्मक बुद्धि बालक को किसी भी परिवेश में समायोजन स्थापित करने में सहायता करती है। बालक की शैक्षणिक, सामाजिक और व्यक्तिगत

सफलता का बड़ा हिस्सा उसकी इस क्षमता पर निर्भर करता है कि वह अपने और दूसरों के भावों को कैसे समझता और प्रबंधित करता है। गुप्ता (2018) के अनुसार, संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को अपने संवेगों की पहचान, उनका उचित प्रबंधन तथा संबंधों को सुदृढ़ बनाए रखने में मदद करती है।

संवेगात्मक विकास विभिन्न अवस्थाओं कृ शैशवावस्था, बाल्यावस्था और किशोरावस्था में अलग–अलग रूप में होता है। शैशवावस्था में प्रारंभिक संवेग अस्पष्ट होते हैं और शरीर की मुद्रा व गतिविधियों से व्यक्त होते हैं। समय के साथ, बालक भावनाओं को भाषा और व्यवहार के माध्यम से व्यक्त करने लगता है। बाल्यावस्था में भावनात्मक प्रतिक्रियाएं कभी–कभी तीव्र और अस्थिर होती हैं, जिन्हें "आंधी और तूफान" की स्थिति कहा गया है। इस अवस्था में क्रोध और भय जैसे भाव प्रबल रहते हैं, किंतु अंतिम वर्षों में इन भावों में स्थिरता और गंभीरता आने लगती है।इस परिवर्तन के पीछे दो मुख्य कारण हैं पहला, भाषा का विकास, जिसके माध्यम से बालक अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकता है; और दूसरा, सामाजिकता का विकास, जिसके कारण वह यह समझने लगता है कि नकारात्मक भावनाएं जैसे क्रोध और भय, अविवेकपूर्ण व्यवहार को जन्म देती हैं।

प्राचीन दार्शनिक प्लेटो ने कहा है कि ''हम जो भी सीखते हैं, उसका कोई न कोई संवेगात्मक आधार होता है।'' किसी बालक की भावनात्मक स्थिति का उसकी सीखने की क्षमता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक भावनाएं जैसे जिज्ञासा, आत्मविश्वास और उत्साह सीखने को प्रोत्साहित करती हैं, जबकि नकारात्मक भावनाएं जैसे भय, क्रोध और चिंता शिक्षण–प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करती हैं।विद्यालय में शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक भावनात्मक वातावरण, सीखने की गुणवत्ता को बढ़ाता है। जिन परिस्थितियों में उल्लेखनीय शैक्षणिक प्रगति हुई है, वहां यह पाया गया है कि शिक्षक और विद्यार्थी दोनों में सकारात्मक भावनाएं अधिक रही हैं। इसके विपरीत, नकारात्मक भावनाएं जैसे गुस्सा, कक्षा के माहौल और विद्यार्थियों की उपलब्धियों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं।

स्पष्ट है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के संवेगात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास के साथ जुड़ा हुआ है। शिक्षा व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उसे भावनात्मक संतुलन, आत्म–नियंत्रण और सामाजिक संबंधों की समझ भी देती है। यह प्रक्रिया जीवन के हर चरण में चलती रहती है और व्यक्ति को एक संपूर्ण, सुसंस्कृत और जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहायक होती है।इस प्रकार, शिक्षा और संवेगात्मक विकास का परस्पर संबंध मानव जीवन में अत्यंत गहरा है। एक ओर जहां शिक्षा व्यक्ति की बुद्धि और कौशल को विकसित करती है, वहीं दूसरी ओर संवेगात्मक बुद्धि उसे जीवन की जटिल परिस्थितियों में संतुलित और सफल बनाए रखने में मदद करती है। अतः शिक्षा को यदि वास्तव में प्रभावी बनाना है, तो उसके दायरे में भावनात्मक विकास और सामाजिक संवेदनशीलता को भी समाहित करना आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य :

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

H_1उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध है।

H_2उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध है।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मात्रात्मक शोध उपागम के अन्तर्गत वर्णनात्मक अनुसंधान की 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया तथा जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर नगरके उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, इलाहाबाद के अन्तर्गत उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् समस्त विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया।विद्यार्थियों का चयनसरल यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के माध्यम से 200 विद्यार्थियों का किया गया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोध उपकरण के रूप में संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु एस0के0 मंगल एवं शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण **संवेगात्मक बुद्धि मापनी**; आत्म–प्रभावकारिता के मापन हेतु मानकीकृत उपकरण डॉ0 के0 सिंह एवं श्रुति नारायण गुप्ता द्वारा निर्मित **''आत्म–प्रभावकारिता मापनी''** उपकरण एवंशैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड इलाहाबाद के कक्षा 10 के प्राप्तांकों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में सम्मिलित किया गया।शोध अध्ययन मे ंआंकड़ों के विश्लेषण हेतु'कार्ल पियर्सन' द्वारा प्रतिपादित प्रोडक्ट मोमेन्ट सहसम्बन्ध विधि का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं व्याख्या :

उद्देश्य 1 –

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

H_1 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध है।

H_{01} उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है।

तालिका संख्या 1

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का विवरण

चर		संवेगात्मक बुद्धि	उपलब्धि
संवेगात्मक बुद्धि	Pearson Correlation	1	**.388****
	Sig. (2-tailed)		.000
	N	200	200

उपलब्धि	Pearson Correlation	**.388****	1
	Sig. (2-tailed)	.000	
	N	200	200

** Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed)

उपर्युक्त *तालिका संख्या 4.1* के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक**0.388**प्राप्त हुआ। अतः उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य**निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध (Low Positive Correlation)** है लेकिन सार्थकता स्तर 0.01 पर सहसंबंध गुणांक सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है'', अस्वीकृत होती है। अतः सम्बन्धित शोध परिकल्पना **''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध है''** स्वीकृत होती है। अतः कह सकते हैं कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध पाया जाता है।

उद्देश्य 2 –

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

H_2 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध है।

H_{02} उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है।

तालिका संख्या 2

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का विवरण

चर		आत्म–प्रभावकारिता	उपलब्धि
आत्म–प्रभावकारिता	Pearson Correlation	1	**.141***
	Sig. (2-tailed)		.047
	N	200	200
उपलब्धि	Pearson Correlation	**.141***	1
	Sig. (2-tailed)	.047	
	N	200	200

*. Correlation is significant at the 0.05 level (2-tailed)

उपर्युक्त *तालिका संख्या 4.2* के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक **0.141** प्राप्त हुआ। अतः उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य **अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध** है लेकिन सार्थकता स्तर 0.05 पर सहसंबंध गुणांक सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है'', अस्वीकृत होती है। अतः सम्बन्धित शोध परिकल्पना **''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध है''** स्वीकृत होती है। अतः कह सकते हैं कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध पाया जाता है।

निष्कर्ष एवं व्याख्या :

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य **सार्थक निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध** पाया गया।अतः सम्पूर्ण प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। स्पष्ट अर्थो में कह सकते हैं कि जैसे–जैसे विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि बढ़ती है, वैसे–वैसे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में भी थोड़ी वृद्धि देखी जाती है, लेकिन यह सम्बंध निम्न स्तर का है। धनात्मक सहसम्बन्ध का मतलब है कि दोनों चर एक ही दिशा में बढ़ते हैं। निम्न का मतलब है कि यह सम्बन्ध मज़बूत नहीं है; अर्थात् संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव सीमित मात्रा में है। सार्थकता का अर्थ है कि सम्बन्ध सांख्यिकीय परीक्षणों के अनुसार वास्तविक और महत्वपूर्ण पाया गया है, केवल संयोग मात्र नहीं है। इसके संभावित कारण है कि जिन विद्यार्थियों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और सामाजिक सम्बन्धों को संभालने की क्षमता अच्छी होती है, वे अपनी पढ़ाई में भी थोड़ा बेहतर प्रदर्शन करते हैं (**बी, 2018 एवं शर्मा, 2012 एवं साहू, 2012**)। परन्तु अन्य कारक, जैसे अध्ययन कौशल, पारिवारिक पृष्ठभूमि, संसाधन, समय प्रबंधन भी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं, इसलिए संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव सीमित रह गया(**पाण्डेय, 2012 एवं शर्मा, 2012**)। स्पष्ट है कि यदि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि को बेहतर बनाया जाए, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में भी सुधार सम्भव है। इसलिए विद्यालयों को पाठ्यचर्या में भावनात्मक शिक्षा को भी शामिल करने पर विचार करना चाहिए।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य **सार्थक अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध** पाया गया।सम्पूर्ण प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। स्पष्ट अर्थो में कह सकते हैं किउच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य एक सार्थक परंतु अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया (**शर्मा, 2012 एवं खगेस, 2022**)। अर्थात् जैसे–जैसे आत्म प्रभावकारिता में थोड़ी–सी वृद्धि होती है, वैसे–वैसे शैक्षिक उपलब्धि में भी थोड़ी–सी वृद्धि देखी जा सकती है, लेकिन यह संबंध बहुत मजबूत नहीं है। लेकिन सार्थक अत्यन्त निम्न सहसम्बन्ध यह दर्शाता हैकि

आत्म–प्रभावकारिता शैक्षिक उपलब्धि को कुछ हद तक प्रभावित करती है, परंतु अकेले यह कारक शैक्षिक प्रदर्शन को निर्णायक रूप से प्रभावित नहीं करता।विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि केवल आत्म प्रभावकारिता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसमें कई अन्य कारक जैसे,अध्ययन की आदतें, पारिवारिक व सामाजिक वातावरण, विद्यालयी संसाधन, शिक्षक का सहयोग, प्रेरणा एवं रुचि आदि भी शामिल होते हैं।यह भी संभव है कि कई विद्यार्थी आत्म–प्रभावकारिता के उच्च स्तर के बावजूद विभिन्न बाह्य कारणों (जैसे परीक्षा का डर, संसाधनों की कमी, पारिवारिक दबाव आदि) के कारण अपेक्षित शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाते **(शर्मा, 2012)**। **अतः** अत्यन्त निम्न सहसम्बन्ध से यह संकेत भी मिलता है कि आत्म प्रभावकारिता का विकास शैक्षिक उपलब्धि के लिए सहायक तो हो सकता है, परंतु इसे सुधारने के लिए बहुआयामी रणनीतियाँ अपनाना आवश्यक है।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ :

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा को एक समग्र रूप से जीवन दृष्टि से ही परिवार व समाज का कल्याण संभव है। शिक्षा शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व को बदलकर उसे आत्मनिर्भर बनाने में अहम भूमिका निभाती है। शैक्षिक निहितार्थ के सम्बन्ध में कुछ विचार निम्नलिखित हैं –

- प्रत्येक बालक को उनकी अभिक्षमता के अनुरूप शिक्षण प्रदान किया जा सकेगा ताकि वह अपनी क्षमता, प्रतिभा, कौशल एवं योग्यता का समुचित विकास कर सकेगा।
- तनावपूर्ण स्थिति में स्वयं को नियंत्रित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी अपनी आत्म–प्रभावकारिता को मजबूत रखकर अपने लक्ष्य को चुनकर, शैक्षिक रणनीतियाँ बनाकर शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ा सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Asharf, N. (2020). A study of organizational commitment among secondary school teachers in relation to emotional intelligence, self-esteem and self-efficacy. Unpublished Ph.D. thesis Education. Aligarh Muslim University, Aligarh. http://hdl.handle.net/10603/354030
2. B. Razia (2018). *Emotional Intelligence, academic stress, socio-Economic Status and Family Environment as Determinants of Academic Achievement among Muslim and Non-Muslim Adolescents. Education.* Unpublished thesis, Aligarh Muslim University, Aligarh, Utter Pradesh. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/247694
3. Baijal, J. (2017). *A Study of Examination Stress among Secondary School Students in relation to Learning Styles, Memory, Creativity and Academic Achievement.* Unpublished Ph.D. Thesis Education. Allahabad Universirty, Prayagraj. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/270237
4. देवांगन, एस. आर. (2012). *बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन.* अप्रकाशित शैक्षिक लघुशोध शिक्षाशास्त्र प्रशिक्षण. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर. Retrieved from https://scert.cg.gov.in/pdf/researchpapers/med%20minor%20research%20collection%202011-12.pdf

5. Gupta, N. (2018). Effect of value based intervention program on Self-Concept and emotional intelligence of adolescents. Unpublished Ph.D. thesis, Education. Punjab University, Chandigarh. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/262023
6. Huang, C. (2016). Gender Differences in Academic Self-Efficacy: A Meta-Analysis. *European Journal of Psychology of Education, 28*(1), 1-35.
7. Hussain, A. (2006). Effect of guidance services on study attitudes, study habits and academic achievement of secondary school students. ***Bulletin of Education and Research***, 28(1), 35–45.
8. Islam, A. (2017). *A Study of Emotional Intelligence in Relation to Stress, Academic Adjustment and Teaching Aptitude of B.Ed. Students. Unpublished Ph.D. Thesis Education.* Allahabad Universirty, Prayagraj. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/185650
9. Julius, S.J. (2022). A study on the relationship between Self-Esteem and Self-Efficacy among College Students. *The International Journal of Indian Psychology, 10(2),* 1537-1540. Retrieved from https://ijip.in/pdf-viewer/?id=38542
10. Kamberi, M. (2025). The types of intrinsic motivation as predictors of academic achievement: the mediating role of deep learning strategy. *Cogent Education*, *12*(1). https://doi.org/10.1080/2331186X.2025.2482482
11. Kim, Y., & Lee, W. (2019). The Impact of Vocational Self-Efficacy on Career Preparation. *Journal of Vocational Education Research, 44*(2), 55-74.
12. कुशवाहा, एस. एवं चन्देल, एन. (2025). शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन. *शोध समागम, 8*(2), 391–396. Retrieved from https://shodhsamagam.com/uploads/issues_tbl/1745999429hashkiya-Ucchhtar-Madhyamik-Vidhyalayo-ke-Vidhyarthiyo-ki-Abhivritti-ka-Unki-Shaikshik-Uplabdhi-par-Prabhav-ka-Adhyayan.pdf
13. Li, Y., & Singh, C. (2023). The impact of perceived recognition by physics instructors on women's self-efficacy and interest. ***arXiv preprint arXiv:2303.07239***. Retrieved from https://arxiv.org/abs/2303.07239
14. Mishra, B. K., & Kumar, R. (2011). A comparative study of adjustment and academic achievement of high school students. ***Journal of Educational Studies***, 4(1), 12–16.
15. Musheer, Z. (2020). *Impact of Social Networking on Study Habits and Academic Achievement of Secondary School Students in relation to their Socio-Economic Status.* Unpublished Ph.D. thesis Education. Aligarh Muslim University, Aligarh. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/341054
16. नारायण, एस. (2020). माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, सांवेगिक बुद्धि, आत्म–प्रत्यय एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन. अप्रकाशित

पी–एच. डी. शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र. सी.एस.जे.एम.यू. कानपुर. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/339511

17. **Neuman, W. L. (2014).*Social research methods: Qualitative and quantitative approaches*** (7th ed.). Pearson Education.
18. Pal, S. (2020). Impact of Social Media on Conflict Management Style, Emotional Intelligence, Mental Health and Personality. Unpublished Ph.D. Thesis Education. Allahabad Universirty, Prayagraj.Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/349708
19. पाण्डेय, ए. (2015). *उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं आदतों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन.* अप्रकाशित पी–एच. डी. शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र. सी.एस.जे.एम.यू. कानपुर. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/219900
20. पाण्डेय, डी. के. (2012). *छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन.* अप्रकाशित शैक्षिक लघुशोध शिक्षाशास्त्र प्रशिक्षण. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर. Retrieved from https://scert.cg.gov.in/pdf/researchpapers/med%20minor%20research%20collection%202011-12.pdf
21. पटेल, के. आर. (2012). *हाईस्कूल स्तर पर पालकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन.* अप्रकाशित शैक्षिक लघुशोध शिक्षाशास्त्र प्रशिक्षण. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर. Retrieved from https://scert.cg.gov.in/pdf/researchpapers/med%20minor%20research%20collection%202011-12.pdf
22. राठौड़, एस. के. (2022). मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्म–प्रभावकारिता अध्ययन हेतु शोध उपकरण का निर्माण एवं विकास. *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 10(5),* 185–188. Retrieved from https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://ijcrt.org/papers/IJCRTP020027.pdf&ved=2ahUKEwjO__7O6pmGAxX6xTgGHTCIDD84ChAWegQIEhAB&usg=AOvVaw3bJvVn7vscEKdGabefQ-0_
23. शर्मा, डी. के. (2016). *उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, आत्म–सम्मान एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन.* अप्रकाशित पी–एच. डी. शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र. रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/481226
24. शर्मा, जे. एवं मिश्रा, एम. (2016). लिंगगत भिन्नता के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. *ग्लोबल जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस, 5(1),* 19–20. Retrieved from https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://www.wor

ldwidejournals.com/global-journal-for-research-analysis-GJRA/recent_issues_pdf/2016/January/January_2016_1454322699__14.pdf&ved=2ahUKEwj64rBwJmGAxV_UGcHHcMeCHYQFnoECEIQAQ&usg=AOvVaw1f3Be0D2vULior60MKUc6d

25. Sharma, S. (2020). *Emotional maturity, Self efficacy and Academic anxiety as determinants of Academic achievement of Senior Secondary School Students.* Unpublished Ph.D. thesis Education. Aligarh Muslim University, Aligarh. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/350637